RESEARCH PAPERS IN NATIONAL/INTERNATIONAL PEER REVIEWED JOURNAL/ CONFERENCE PROCEEDINGS

YEAR : 2018-19

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

January To March 2018
E-Journal
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. - MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.110 (2017)

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

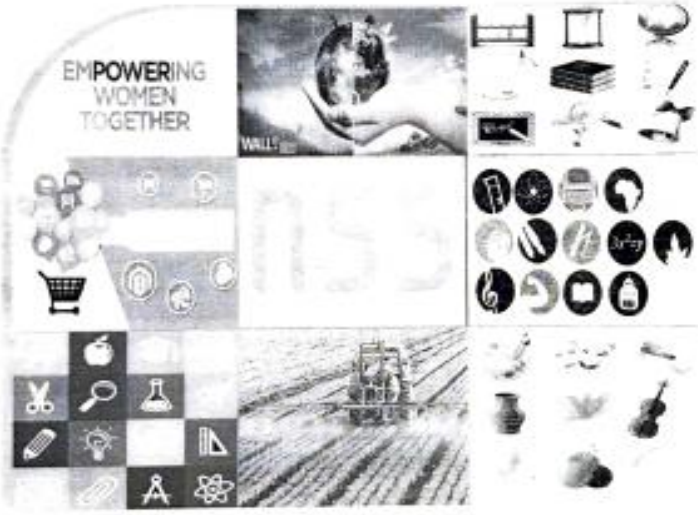

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, NEEMUCH (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, Email : nssresearchjournal@gmail.com, Website www.nssresearchjournal.com

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E= bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018 E-Journal

154. भीमल रेशों द्वारा धागों का निर्माण कर उत्तराखण्ड के घरेलू उद्योगों के लिए एक योगदान (गुँजा सोनी) 447
155. Career Lattice Model - A Meaningful link between pre-service, in-service, and continuing education (Dr. Premlata Gandhi) 450
156. पर्यावरण अध्ययन विषय के शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन (रेखा दाधीच, डॉ. अनिता कोठारी) 453
157. Robo Tutor- A Research on Future of Teaching (Dr. Premlata Gandhi) 455
158. A Study on Financial Performance of Stock Exchange in India (Chanda Parmar) 459
159. Analyzing Impact Of Online Social Platform On Internet Buying Behavior (Dr. Ganpat Joshi) 463
160. Practises for Building Quality Software with Automation: A Practical Approach (Vikas Kumar Choudhary, Dr. Sanjay Chaudhary) 466
161. बदलते परिदृश्य में अभिजात महिलाओं की स्थिति की भूमिका (डॉ. रोमा श्रीवास्तव) 469
162. महेश्वर हथ करघा उद्यमियों में योगासन के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना (प्रतिष्ठा दासौंधी, डॉ. मंजु शर्मा) 471
163. मध्यप्रदेश में आदिवासी जनजातियों द्वारा वनोषधियों का संग्रहण के आर्थिक महत्व तथा संभावनाओं का भौगोलिक अध्ययन (डॉ. सुमनलता पुरोहित, मिताली पॉल) 473
164. मध्यप्रदेश में सूचना का अधिकार का क्रियान्वयन : एक समीक्षा (डॉ. ओम प्रकाश परमार) 476
165. A Study on Green Initiative Product of FMCG Companies (Mrs. Usha Sharma, Dr. Deepak Singh)..... 478
166. मध्यप्रदेश पंचायत निर्वाचन (2004-2005) एक विश्लेषणात्मक विवेचन (डॉ. अमृतलाल परमार) 481
167. Influence of Period of Investment on the Investment Decision Factors (Mradul Panthi) 484
168. Customer Satisfaction In Online Banking Services - An Over View (Suman Gunjetia, Dr. Payal Sachdev) 487
169. Issues And Challenges Related To Pedagogical Strategies For Inclusive Education (Dr. Monisha Mishra, Alka Asati) 490
170. मध्यप्रदेश के निमाड़ में पर्यटन उद्योग की समस्याएँ और समाधान (डॉ. सुनील मोरे) 494
171. जनजातीय विकास का भौगोलिक अध्ययन (संदीप कुमार सिंह, डॉ. सुमन सिंह) 496
172. Planning and Control System in Banks in India : Some Aspects (Dr. Sushma Maheshwari) 498
173. भारिया जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव (डॉ. पूजा तिवारी) 506
174. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राजनैतिक चिन्तन (डॉ. नवीन कुमार, पुष्पा साकेत) 508
175. महिला सशक्तिकरण एक विधिक अध्ययन (राकेश कुमार चौरासे) 510
176. महिलाओं के उत्थान हेतु राष्ट्रीय कानूनों का एक विधिक अध्ययन (कमलेश मौर्य) 512

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728) ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) January To March 2018 E-Journal (506)

भारिया जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. पूजा तिवारी *

प्रस्तावना – वैश्वीकरण से तात्पर्य विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को सक्रिय रूप से आपस में जोड़ना होता है। वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है, इस युग में 'निजीकरण' तथा 'उदारीकरण' को बढ़ावा दिया जा रहा है। संचार क्रांति के कारण विश्व के सभी देश समीप आते जा रहे हैं। वैश्वीकरण एक ऐसा मंच है जहाँ जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज का निर्माण कर एक साथ कार्य करते हैं। आज वैश्वीकरण का प्रभाव मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रौद्योगिक जीवन पर पड़ रहा है। विगत दशकों में प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, जिन्हें हम वैश्वीकरण के रूप में देखते है। भारत में भी वैश्वीकरण का प्रभाव तीव्रता से देखने को मिलता है। भारत में अधिकांश राज्यों में जनजातियाँ निवासरत् है अतः वैश्वीकरण का प्रभाव जनजातियों पर भी पड़ा है। वैश्वीकरण एक बहु-आयामी एवं बहुलवादी प्रक्रिया है, जो विश्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक रूप से समायोजित करती है।

शोध प्रविधि – इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक विषय सामग्री के आधार पर शोध पत्र को तैयार किया गया है जिसके हेतु पत्र-पत्रिकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसके साथ-साथ जनजातीय परम्पराओं और विद्वानों का भी मार्गदर्शन प्राप्त किया गया है।

समस्या – भारत में वैश्वीकरण से जुड़े आर्थिक सुधारों यानि उदारीकरण तथा निजीकरण की शुरूवात सन् 1991 से हुई है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न समाजों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र से लेकर संगीत, वेशभूषा एवं मीडिया के क्षेत्र तक अत्यंत द्रुत गति से प्रभावित हुए है।

उद्देश्य – 80 के दशक में उभर कर आया एवं 90 के दशक में लोकप्रियता हासिल करने वाला वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण शब्द आधुनिक विश्व की ऐसी प्रघटना है, जिसने विश्व के सभी विकसित एवं विकासशील देश एवं उनकी आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। सूचना प्रौद्योगिक क्रांति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्रगति एवं नये आयाम प्रदान किए है।

संवैधानिक प्रावधानों द्वारा नामांकित विशेष पिछड़ी जनजातियों में 'भारिया जनजाति' प्रमुख है, जिन्हें पूर्व में 'आदिम जनजाति' भी कहा गया।

समाधान – भारिया जनजाति मुख्य रूप से छिन्दवाड़ा जिले के 'तामिया' तहसील के 'पातालकोट' नामक स्थान पर पायी जाती है। पातालकोट अर्थात् बहुत गहराई पर रहने का स्थान पातालकोट छिन्दवाड़ा मुख्यालय से लगभग 70 किलोमीटर दूर है जो लगभग 2750 से 3250 फीट गहराई पर स्थित है। भारिया जनजाति यहाँ पर लगभग 500 वर्षों से अधिक समय से निवासरत है। 'भारिया' स्वयं को गोंड के 'छोटा भाई' कहते हैं तथा द्रविड़ समूह से है।

भारिया जनजाति के लोगों का रंग काला, औसत कद पतला काली आंखे, चौड़ी नाक आदि शारीरिक विशेषताएं रखते है। भारिया स्त्रियाँ सुंदर होती है, यहाँ पर जनजाति के मुखियां को 'पटेल' कहा जाता है, इनमें भूमका पड़िहार कोटवार भी होते है। पातालकोट में कुल 24 गांव तथा 15 हेमलेट है। इनमें मुख्य गांव 'रातेड़', चिमटीपुर, गैलडुब्बा, होमरी, सहारा, गुज्जा आदि है।

भारिया जनजाति की कुल 51 गोत्र है जिनमें से 16 गोत्र अभी भी अस्तित्व में मुख्यरूप से पायी जाती है।

भारिया जनजाति के पुरूषों का मुख्य परिधान धोती, कुर्ता, बंडी साफा जबकि महिलाओं में सेंदरी साड़ी एवं पोल्का का प्रचलन मूल रूप से है। भारिया महिलाए 'टैटू' गुदवाने की शौकीन होती है, ओझा औरत इसे बनाती है, महिलाएं आँखों के ऊपर धनुष कार लाइन एवं बिंदियों द्वारा सजती है। गहनों में मुख्य रूप से पुल्की, मुंदरी, तोड़ा, हंसली, बिछोरिया आदि पहनती है। यहां पर मुख्य रूप से कर्मा, सैला, भड़म एवं सैला नृत्य होते है।

भारिया जनजाति हिंदु धर्म एवं देवी देवताओं की पूजा करते है, प्रमुख देवताओं में 'बूढ़ादेव, दुल्हादेव, नागदेव, बड़ा महादेव, बरूआ, भीमसेन' आदि है। मुख्य त्यौहार होली, नागपंचमी, दशहरा, दीवाली, जवारे, शिवरात्रि आदि है।

भारिया जनजाति के प्रमुख वाद्ययंत्र नगाड़ा, शहनाई, बासुंरी चकुली, तंबुरा, चिकारा, घुंघरू, खड़ताल, मंजीरा एवं ढोल आदि है। यहाँ पर मुख्य मेलों के रूप में 'मेघनाद' तथा 'मड़ई' है जो चैत्र पूर्णिमा में लगता है।

इस क्षेत्र में आर्थिक आधार के रूप में लघुवनोपज, जड़ी-बूटी संग्रहण, बांस कलाकृति, झाड़ू बनाना, दरवाजे बनाने का काम आदि है।

पातालकोट में भारिया जनजातिय क्षेत्रों में मकान कच्चे होते है, घर के सामने चार खंभो से दालान बनाया जाता है। जो महुआ, गुल्ली एवं आम की गुठली सुखाने के काम आता है। यहाँ पर मुख्य रूप से पेज, ज्वार, कुटकी, कोदो, चावल, मांड महुरा की रोटी, आम की गुठली आदि खाद्य पदार्थ होते है। ज्वार के आटे एवं महुए से मीठी, रोटी बनायी जाती है।

जनजाति के लोगो, औषधीय पौधों की पहचान एवं उनके उपयोग की जानकारी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। मुख्य रूप से यहाँ पर अश्वगंधा, अडूसा, कालमेघ, सफेद मुसली, कालीहल्दी, चिरायता, सितावर, हर्रा, बहेड़ा मिलवा अर्जुन, गिलोय चिरौंजी रूपेगंधा आदि अनेक औषधीय दुर्लभ पौधों से दवाईयां बनाने का कार्य किया जाता है।

भारिया जनजाति आधुनिकता एवं सभ्यता से परे है, इसलिए उनके विकास के विषय में वे अनभिज्ञ है, किन्तु वैश्वीकरण के प्रभाव से भारिया जनजाति समाज अछूता नहीं है।

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला-छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

BY – DR. POOJA TIWARI

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

© 2019 IJRAR June 2019, Volume 6, Issue 2 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

मौलिक कर्तव्य संविधान में गैर–प्रवर्तनीय होने के बावजूद महत्त्वपूर्ण

डॉ. कपिल खरे
भूतपूर्व अतिथि विद्वान
राजनीति विज्ञान विभाग, शा महा बिछुआ (म प्र), भारत

सामान्यतः कर्तव्य शब्द का अभिप्राय उन कार्यों से माना जाता है, जिन्हें करने के लिए व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। कर्तव्य शब्द से वह बोध होता है कि व्यक्ति किसी कार्य को अपनी इच्छा, अनिच्छा या केवल बाह्य दबाव के कारण नहीं करता है अपितु आंतरिक नैतिक प्रेरणा के कारण ही करता है। अतः कर्तव्य के पार्श्व में सिद्धांत ... उद्देश्य की प्रेरणा है। जिस प्रकार संतान और माता–पिता का परस्पर संबंध, पति–पत्नी का संबध, सत्यभाषण, अस्‍... (चोरी न करना) आदि के पीछे एक सूक्ष्म नैतिक बंधन मात्र है। कर्तव्य शब्द में **"कर्म"** और **"दान"** इन दो भावना... का सम्मिश्रण है। इस पर निरूस्वार्थता की अस्फुट छाप पूर्णतः नजर आती है। कर्तव्य मानव के किसी कार्य को क... या न करने के उत्तरदायित्व के लिए दूसरा शब्द है। कर्तव्य दो प्रकार के होते हैं– नैतिक तथा कानूनी। नैति... कर्तव्य वे हैं जिनका संबंध मानवता की नैतिक भावना, अंतरूकरण की प्रेरणा या उचित कार्य की प्रवृत्ति से होता ... इस श्रेणी के कर्तव्यों का सरंक्षण राज्य द्वारा नहीं होता। यदि मानव इन कर्तव्यों का पालन नहीं करता तो ... उसका अंतरूकरण उसको धिक्कार सकता है, या समाज उसकी निंदा कर सकता है किंतु राज्य उन्हें इन कर्तव्यों ... पालन के लिए बाध्य नहीं कर सकता। सत्यभाषण, संतान संरक्षण, सद्व्यवहार, ये नैतिक कर्तव्य के उदाहरण ... कानूनी कर्तव्य वे हैं जिनका पालन न करने पर नागरिक राज्य द्वारा निर्धारित दंड का भागी हो जाता है। इ... कर्तव्यों का अध्ययन राजनीतिक शास्त्र में होता है।

कैटलिन के शब्दों में – ***"नागरिकता किसी व्यक्ति की वह वैधानिक स्थिति है जिसके कारण वह राजनीतिक रूप ... संगठित समाज की सदस्यता प्राप्त कर विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त करता है।"*** जब व्यक्ति ... नागरिकता प्राप्त हो जाती है तो उसके बेहतर निर्वहन के लिये मौलिक अधिकारों की आवश्यकता होती है वहीं रा... की व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिये राज्य नागरिकों से मौलिक कर्तव्यों के निर्वहन की भी अपे... करता है।

अधिकार और कर्तव्य का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। वस्तुतः अधिकार और कर्तव्य एक ही पदार्थ के दो पार्श्व हैं। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का अमुक वस्तु पर अधिकार है, तो इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि अन्य व्यक्तियों का कर्तव्य है कि उस वस्तु पर अपना अधिकार न समझकर उस पर उस व्यक्ति का ही अधिकार सम... अतः कर्तव्य और अधिकार सहगामी हैं। जब हम यह समझते हैं कि समाज और राज्य में रहकर हमारे कुछ अधिका... बन जाते हैं तो हमें यह भी समझना चाहिए कि समाज और राज्य में रहते हुए हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं। अनि... अधिकारों का अनिवार्य कर्तव्यों से घनिष्ठ संबंध है। दुनिया भर के कई देशों ने **'जिम्मेदार नागरिकता'** के सिद्धांतों ... मूर्त रूप देकर स्वयं को विकसित अर्थव्यवस्थाओं में बदलने का कार्य किया है।

इस संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका को सबसे उत्कृष्ट उदाहरण माना जा सकता है। अमेरिका द्वारा अपने नागरि... को **'सिटिजन्स अल्मनाक'** नाम से एक दस्तावेज जारी किया जाता है जिसमें सभी नागरिकों के कर्तव्यों का विव... दिया होता है।

By – Dr. Kapil Khare

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

International Peer Reviewed, Open Access Journal

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138 | Impact factor: 5.75 | ESTD Year: 2014

UGC and ISSN Approved and added in the UGC Approved List of Journals .

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

This work is subjected to be copyright. All rights are reserved whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, re-use of illusions, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other way, and storage in data banks. Duplication of this publication of parts thereof is permitted only under the provision of the copyright law, in its current version, and permission of use must always be obtained from IJRAR www.ijrar.org Publishers.

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) is published under the Name of IJRAR publication and URL: www.ijrar.org.

International Journal of Research and Analytical Reviews

IJRAR

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

©IJRAR Journal

Published in India

Typesetting: Camera-ready by author, data conversation by IJRAR Publishing Services – IJRAR Journal.

IJRAR Journal, WWW.IJRAR.ORG

E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) (IJRAR) is published in online form over Internet. This journal is published at the Website http://www.ijrar.org, maintained by IJRAR Gujarat, India.

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

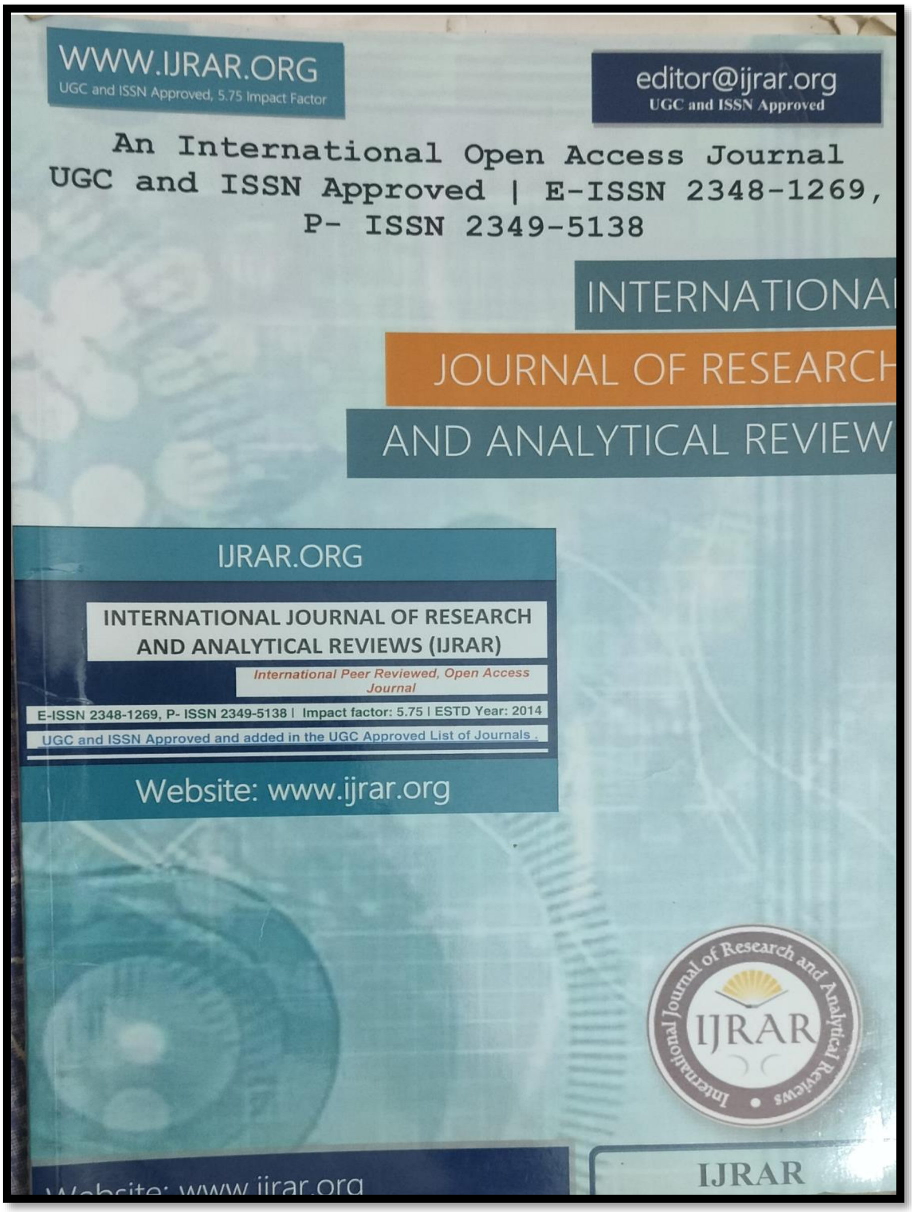

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E= bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN : 2277-7881; IMPACT FACTOR – 5.818; IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
VOLUME 7, ISSUE 2(3), FEBRUARY 2018

भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन

डॉ. कपिल खरे
अतिथि विद्वान (राजनीति विज्ञान)
शासकीय महाविद्यालय बिछुआ (म0प्र0)

सारांश :–

किसी भी देश में स्वतन्त्रता एवं लोकतंत्र जीवित है या नहीं यदि यह मालूम करना है तो यह जानना जरुरी है कि वहां विपक्ष है नहीं,और यदि है तो उसकी संसद में भूमिका क्या है ?कैसी है?किसी भी लोकतंत्र की प्रतिनिधि संस्था में विपक्ष एवं उसके नेता की भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए लोकतंत्र की सफलता में सत्ता पक्ष की जितनी भूमिका है उतनी ही विपक्ष की भी है कोई भी फैसला जनता का फैसला तभी कहला सकेगा जब सरकार एवं विपक्ष सहयोग करें और साथ ही अपनी जिम्मेदारी क परिचय भी दें। विपक्ष उन्हें कहा जाता है जिन्हें अपने पक्ष में बहुमत प्राप्त नहीं होते किन्तु अपनी प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विपरीत आचरण करने पर विरोध करने के लिए वह कटिबद्ध है।

शोध प्रविध :– इस शोध पत्र में भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन में द्वितीय शोध सामाग्री के द्वारा अध्ययन किया गया है। जिसमें विद्वानों का मार्गदर्शन एवं सुझाव भी समाहित है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया गया है।

उद्देश्य :–

पिछले एक दशक से भारतीय संसद में जैसा आचरण विपक्ष का देखने में आ रहा है उससे यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि विरोध प्रदर्शन करने का एकमात्र तरीका असंसदीय कार्यवाही तथा संसद की कार्यवाही को नहीं होने देना ही माना जाने लगा है । पूर्व में भी संसद की कार्यवाही को रोका जाता था या बाधित किया जाता था लेकिन ऐसा सिर्फ तभी किया जाता था जब विपक्ष को यह प्रतीत होता था कि उसकी बात को सुना नहीं जा रहा है या महत्त्व नहीं दिया जा रहा हैं। पीठासीन अधिकारी के आसन के सामने इकट्ठा होकर

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

12. Organic Food-Healthy Returns to Tradition — 130
Khushboo Ahuja

13. Self-Confidence in Integrating ICT Education Among Teacher Educators B.Ed Colleges — 147
Patan Mastan Vali

14. Indian Government Move Towards Tougher Consumer Protection Law: A Brief Study — 162
Cherukuri Sreenivasa Rao and Koneru Anuradha

15. भारतीय संसद में विपक्ष की भूमिका – आलोचनात्मक मूल्यांकन — 172
कपिल खरे

16. **पर्व–त्योहार संबंधी नागपुरी लोकगीत** — 177
रामजय नाईक

17. Effectiveness of Micro Finance in Sustainable Rural Development –A Study in Dhemaji District — 183
Mridu Pavan Chintey

18. Child Labour of Assam:-A Case Study of Dhemaji Town in Assam — 192
Dandiram Pegu

19. Artificial Intelligence and Laws in India: An Analytical Appraisal — 203
Vikrant Sopan Yadav

20. **స్త్రీల కథలు - దేశభక్తి** — 215
ఏటూరు జ్యోతి

21. Women's Job Participation In And Efficiency Of Nrega Program – A Case Study — 220
Kalyani Racha

22. Indian Economy - Problems of Development and Planning — 236
Dr.Varre Prabhakar

23. Problems and Perspectives of Caste System in India – A Study — 247
Kaka Ravi

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

CONTENTS

Volume 7 Issue 2(3) February 2018

S. No		Pg. No
1.	A Study on HRM Practices in Select Hospitals in Guntur District **B.Suneel Kumar and D.A.R.Subrahmanyam**	1
2.	Dalit Women in Dr. Ambedkar's Social Movements **Ch. Madhusudhana Rao**	14
3.	Gymnema Sylvestre of Phytochemical Study and Pharmacological Activities: A Review **Siva Rami Reddy.E**	24
4.	Electronic Media Broadcast in Telugu Language **Ramanujapuram Sucharitha**	38
5.	पञ्चतन्त्रग्रन्थरत्ने आतिथ्यभावना **नरेन्द्र आर्यः**	51
6.	The Potential Significance of Condominium Houses for the Ever Growing Urban Population of Southern Nations Nationalities and Peoples Regions (SNNPR): Ethiopia **T. T. Anteneh and E.A. Narayana**	58
7.	The First Interim Ministry of Orissa (Odisha): A Study (1st April 1937-13 July 1937) **Sudarsan Pradhan**	83
8.	सुबोधिन्यनुसारं प्रायश्चित्तेन पापापूर्वाणां ध्वंसप्रतिपादकत्वनिरूपणम् **विघ्नेश्वरभट्टः**	87
9.	Kāma – Misconception in Indian Society **Santosh More**	92
10.	Perceived Performance Appraisal and Job Satisfaction: Supervisors vs Subordinates, Ethiopian Revenue and Custom Authority (ERCA) **Wako Geda Obse and T.Subbarayudu**	100
11.	The Clash of Civilizations; A Critique **Mohammad Imran**	117

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E= bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

Volume 7, Issue 2(3), February 2018

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH

Published by
Sucharitha Publications
48-12-3/7, Flat No: 302, Alekya Residency
Srinagar, Visakhapatnam – 530 016
Andhra Pradesh – India
Email: victorphilosophy@gmail.com
Website: www.ijmer.in

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E= bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

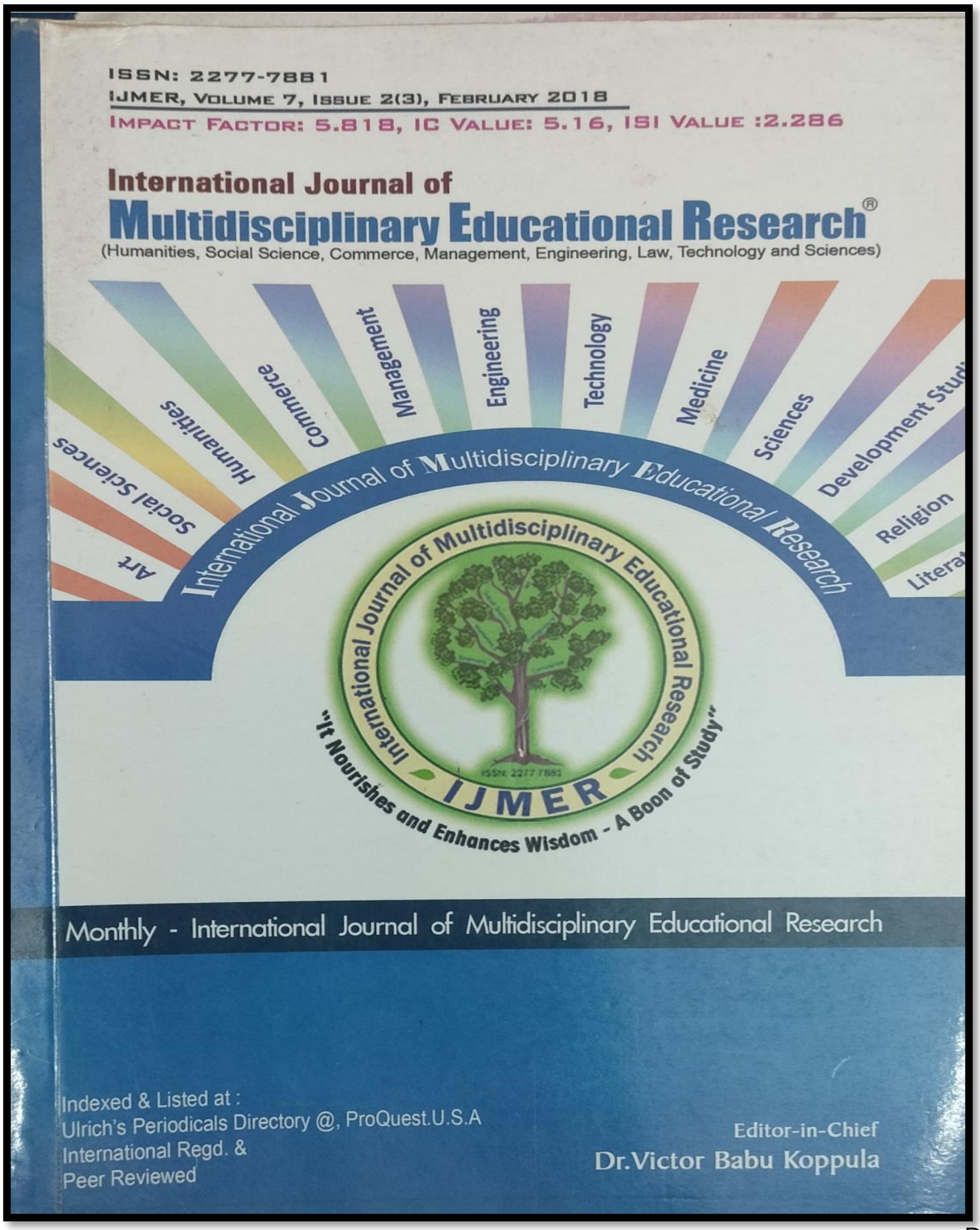

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

ISSN : 2394-3580
Swadeshi Research Foundation Vol. – 5, No. - 5 March. 2018
A Monthly Journal of Multidisciplinary Research (UGC APPROVED Multidisciplinary Journal Sl.No-108, Journal No-62711)
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-3.9 Research Journal

लोकतंत्र की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में धर्मनिरपेक्षता

डॉ. कपिल खरे
अतिथि विद्वान, राजनीति विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ (म.प्र.)

सारांश :– लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता अपना शासक खुद चुनती है। यह शब्द लोकतांत्रिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक राज्य दोनों के लिये प्रयुक्त होता है। यद्यपि लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीतिक सन्दर्भ में किया जाता है, किंतु लोकतंत्र का सिद्धांत दूसरे समूहों और संगठनों के लिये भी संगत है। सामान्यतः लोकतंत्र विभिन्न सिद्धांतों के मिश्रण से बनते हैं, पर मतदान को लोकतंत्र के अधिकांश प्रकारों का चरित्रगत लक्षण माना जाता है।

भारतीय संविधान के द्वारा भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। भारतीय संविधान की पूर्वपीठिका में सेक्युलर शब्द 42 वें संविधान संसोधन द्वारा सन 1976 में जोड़ा गया। किन्तु ऐतिहासिक रूप से भारत में सर्वधर्म समन्वय और वैचारिक एवं दार्शनिक स्वतन्त्रता अनादी काल से चली आ रही है।भारतीय संविधान के प्रस्तावना में घोषणा के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। धर्मनिरपेक्ष शब्द भारतीय संविधान की प्रस्तावना में बयालीसवाँ संशोधन द्वारा डाला गया था। यह सभी धर्मों और धार्मिक सहिष्णुता और सम्मान की समानता का अर्थ है। भारत, इसलिए एक आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है। हर व्यक्ति को उपदेश, अभ्यास और किसी भी धर्म में चुनाव प्रचार करने का अधिकार है। सरकार के पक्ष में या किसी भी धर्म के खिलाफ भेदभाव नहीं करना चाहिए. यह बराबर सम्मान के साथ सभी धर्मों का इलाज करना होगा. एस आर बोम्मई बनाम भारतीय संघ में भारत के सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के मूल ढांचे का एक अभिन्न हिस्सा धर्मनिरपेक्षता को माना है।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र में द्वितीय शोध सामाग्री का संकलन किया गया है। जिसके हेतु पत्र–पत्रिकाओं आदि को शोध पत्र बनाने में अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य :– देश के लोकतंत्र के लिए वहुलतावाद और धर्मनिरपेक्षता बेहद जरूरी गुण हैं।देश का संविधान यह सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक इस लोकतांत्रिक ढांचे में तमाम विविधताओं और वहुलताओं के साथ रहे।यही इस लोकतंत्र की मजबूती और खूबसूरती है। आज हमारे सामने देश का आधारभूत स्वरूप, जो पूर्णतरू धर्मनिरपेक्ष है, के मूल्यों पर एक बार फिर से जोर देने की जरूरत है। ये मूल्य हैं– समानता, धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता। इस विविध और बाहुलता के धनी देश में इन्हीं मूल्यों को आधार बनाकर एक दूसरे के प्रति स्वीकृति बनायी गई है और इन्हीं को नींव बनाकर ये लोकतंत्र अपनी स्थिरता को कायम रखेगा।भारत विविधतापूर्ण संस्कृति का देश है। जिसमें अधिनायकवाद का कोई स्थान नहीं है। जो लोग अधिनायकवाद को भारत में बढ़ावा देना चाहते है वे लोकतंत्र को कमजोर करते है।

समस्याऐं :– भारत की स्वतंत्रता के साथ ही देश में लोकतंत्र आया है सूचना के अधिकार से लोकतंत्र बहुत मजबूत हुआ है इसके प्रयोग से प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ायी जा सकती है। किन्तु निहित स्वार्थी लोगों द्वारा की जा रही आर.टी. आई. कार्यकर्ताओं की हत्या लोकतंत्र को कमजोर करेंगी।

सांप्रदायिकता सभी धर्मों में आती है। धर्म मानव मूल्य का नाम है। किन्तु किसी विशेष धर्म की राजनीति सांप्रदायिक होती है।

धर्मनिरपेक्षता का मतलब नास्तिकता नहीं है वरन् राज्य सत्ता धार्मिक आधार पर न चले यह सुनिश्चित करना है। धर्म के मायने नैतिकता होनी चाहिए। भारतीय संविधान से अच्छा कोई मार्गदर्शक ग्रंथ धर्मनिरपेक्षता को समझाने के लिए नहीं हो सकता है।

भगतसिंह, अम्बेडकर और गांधी भारतीय राष्ट्रवाद के प्रतीक है। समाज में बेहतरी केवल सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से ही आ सकती है तथा सामाजिक आन्दोलन केवल लोकतंत्र में ही संभव है।

भारतीय लोकतंत्र को बांटो और राज करो की नीति लिंग असमानता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद तथा अमीर गरीब के बीच बढ़ती खाई आदि से खतरा है। उन्होंने लोकतंत्र की मजबूती के लिए सांप्रदायिक सौहार्द व धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया।

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

Contents

S.No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	Educational views of Swami Vivekananda in the present context	Prof. G. Vidya Sagar Reddy Dr. G. Vasudevaiah	1-6
2	A study of status of sanitation and sewerage services to urban slum people and its impact on the living conditions after the BSUP program implementation with special reference to Indore city	Dr. (Mrs.) Shree Dwivedi Avinash Bhatheja	7-10
3	Ayurvedic herbalism development prospective views	Vd.Pravin Raghunathrao Joshi Vd.Anita Pravin Joshi (Kulkarni)	11-12
4	In Pursuit of Happiness: Women in Selected Breast Stories of Mahasweta Devi	Niharika Singh	13-16
5	Shades of Gender in Talat Abbasi's Short Stories	Gauri Handa	17-19
6	PIKETTY AND PROGRESS – A REVIEW	Dr. Madhu Satam	20-21
7	मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम की चुनौतियाँ	कु. सांत्वना अग्रवाल	22-24
8	अनुसूचित जाति महिला सशक्तिकरण : एक विश्लेषण (उज्जैन जिले के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. ललिता सोलंकी प्रो. तपन चौरे	25-35
9	भारतीय युवा और भारत	रजनीश बाजपेई	36-38
10	लोकतंत्र की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में धर्मनिरपेक्षता	डॉ. कपिल खरे	39-45
11	भारत में महिलाओं की स्थिति एवं विकास	डॉ. सुमन तिवारी	46-53
12	ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में पंचायतों की आवश्यकता एवं महत्व	श्रुति जैन	54-55
13	बढ़ती जरूरतों से उलझता उपभोक्ता संरक्षण	डॉ. असलम खॉन	56-59
14	मुण्डारी साहित्य में काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' का योगदान	लखीन्द्र मुण्डा	60-62
15	प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा	कृष्ण कुमार पाण्डेय डॉ. रामरतन साहू	63-65
16	सार्वजनिक वितरण प्रणाली से संबंधित योजनाएं	डॉ. अशोक सोनी निकिता खरे	66-68
17	महिला सुरक्षा संबंधी कानून – एक विवेचना	ज्योति सिंह (राफिया)	69-72
18	Today's Need – Swachh Bharat Abhiyan	Dr. Prabha Soni	73-75

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून

डॉ० कपिल खरे*

सारांश : आधुनिककालीन न्याय व्यवस्था में संविधान को सर्वोच्च माना गया है, परन्तु समाज में व्याप्त धार्मिक जातिगत विविधता के आधार पर कुछ विभिन्न कानूनगत विशेषताएँ दृष्टिगोचर भी होती है, जिसके कारण मौर्यकालीन समान नागरिक संहिता का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है जब समय-समय पर आधुनिक काल में इस प्रकार की जन सामान्य से माँग उठती रहती है। यह दुर्भाग्य का विषय है कि देश के राजनेताओं राजनीतिकदलों सहित अधिकांश लोगों ने समान नागरिक संहिता के विषय पर न तो भारत के संविधान की आत्मा को समझने का प्रयास किया और न ही सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इस विषय पर समय समय पर दिए गए निर्णयों को देखने की कोशिश की। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता के विषय पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करते हुए जो रोशनी दिखाई है,.उसमे सभी पूर्वाग्रहों एवं दुराग्रहों को छोड़ते हुए सद्भावना के साथ चिंतन एवं मनन होना आवश्यक है।

प्रविधि : इस शोध पत्र विषय समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून विषय पर द्वितीय शोध सामग्री के द्वारा अध्ययन किया गया है। इसके साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं, विद्वानों का मार्गदर्शन के द्वारा भी अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य : जब ब्रिटिश भारत आये तो उन्होंने पाया कि यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि सभी धर्मो के अलग अलग धर्म सम्बंधित नियम कानून है। अतः उन्होंने इस पर विचार किया कि सभी भारतीय नागरिको के लिए एक ही नागरिक संहिता बनाई जाये पर धर्मो की विविधता और सभी के अपने अपने कानून होने के कारण उन्होंने यह विचार त्याग दिया। सन 1840 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लेक्स लूसी रिपोर्ट के आधार पर अपराधों सबूतों और अनुबंधों के लिए एक समान कानून का निर्माण किया गया था,.लेकिन उन्होंने जानबूझकर हिन्दुओं और मुसलमानो के कुछ निजी कानूनों को छोड़ दिया था।

संविधान का निर्माण करते हुए बुद्धिजीवियों ने यह सोचा कि प्रत्येक धर्म के भारतीय नागरिकों के लिए एक ही सिविल कानून रहना चाहिए। इसके अंतर्गत विवाह सम्पत्ति विरासत का उत्तराधिकार दत्तक ग्रहण आते है अर्थात इन सभी विषयों में सभी धर्मों के लिए एक ही कानून लागू होगा। वर्तमान में हर धर्म के लोग इन मामलों का निपटारा अपने अपने पर्सनल लॉ के तहत करते हैं।

समस्या : भारत की आजादी के बाद भी वह कई संकीर्ण मानसिकताओं का गुलाम बना हुआ था। जहाँ एक और हिन्दू पुरुष एकाधिक विवाह कर सकते थे, वही दूसरी ओर एक विधवा महिला पुनर्विवाह का विचार भी मन में नहीं ला सकती थी। महिलाओं को उत्तराधिकार और सम्पत्ति के अधिकार से वंचित रखा गया था महिलाओं के जीवन में इन सामाजिक बेड़ियों को तोडने के लिए नेहरू जी ने हिन्दू कोड बिल का आवाहन किया। डॉ.भीमराव अम्बेडकर भी इस मामले में नेहरू जी के साथ खड़े नजर आये,.परन्तु इस बिल का पुरजोर विरोध किया गया। 1940 के दशक में गठित संविधान सभा ने जहाँ एक ओर समान नागरिक संहिता को अपनाकर समाज में सुधार चाहने वाले डॉ. बी आर अम्बेडकर जैसे लोग थे, वहीं धार्मिक रीति रिवाजो पर आधारित निजी कानूनों को बनाये रखने के पक्षधर मुस्लिम प्रतिनिधि भी थे ,जिसके कारण संविधान सभा में समान नागरिक संहिता का विरोध किया गया। इसके अलावा देश की राजनीतिक विसंगति के कारण किसी सरकार ने इसे लागू करने के लिए उचित इच्छाशक्ति नहीं दिखाई।

इस प्रकार आजादी के पहले हिन्दू नागरिक संहिता बनाने का प्रयास असफल रहा। बाद में संविधान के भीतर 1952 में पहली सरकार गठित होने पर इस दिशा में कार्यवाही प्रारम्भ हुई और विवाह आदि विषयो पर हिन्दूओ के लिए अलग अलग कोड बनाये गए।

समाधान : सर्वप्रथम 1985 में सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ के तत्कालीन मुख्य न्यायमूर्ति वाय वी चन्द्रचूड़ सहित पांच वरिष्ठ न्यायमूर्तियों ने बहुचर्चित शाहबानो केस में अपराध विधान प्रक्रिया की धारा 125 के अन्तर्गत 500 रूपए प्रतिमाह भरण पोषण देने के लिए समान नागरिक संहिता लागू किये जाने के संवैधानिक कर्तव्य को पूर्ण करने हेतु अपना निर्णय दिया। तत्पश्चात 1985 में ही सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तिगण चिन्नप रेड्डी एवं आर बी मिश्रा ने निर्णय देते हुए लिखा कि अब समय आ गया है जब देश में समान नागरिक संहिता लागू की जाये। तदुपरान्त सन 1995 में पुनः सर्वोच्च न्यायालय की

*अतिथि विद्वान (राजनीति विज्ञान), शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ (म0प्र0)

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

अनुक्रमणिका

- 'सिन्धुराजवधम्' महाकाव्य के रचयिता डॉ0 बलभद्रशास्त्री का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व — 1–3
  मोनिका यादव
- ब्रह्माण्ड एवं संस्कृत–विद्वानों व ऋषियों का प्रकृति–प्रेम एक : वैज्ञानिक–दृष्टिकोण — 4–8
  मनोज जोशी
- डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार जातिवाद एवं समाजवाद — 9–14
  डॉ0 गोपाल प्रसाद
- मुस्लिम महिलाएँ : तीन तलाक एवं शिक्षा — 15–18
  हेमलता सिंह
- लघु एवं कुटीर उद्योगों में भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रभाव अनूपपुर जिले के सन्दर्भ में — 19–21
  डॉ0 हीरालाल चौधरी
- समान नागरिक संहिता : एक राष्ट्र एक कानून — 22–24
  डॉ0 कपिल खरे
- बौद्ध एवं जैनधर्म के कर्म विचार में तुलना — 25–27
  डॉ0 कुमारी सरोज व डॉ0 पारसनाथ प्रसाद
- पर्यटन उद्योगों का पर्यावरणीय विकास : एक ऐतिहासिक अध्ययन — 28–30
  डॉ0 मनोरमा सिंह
- राष्ट्रीयता एवं वैश्वीकरण — 31–33
  डॉ0 मिताली मीनू
- प्रवासी हिन्दी साहित्य में कहानी–बोध — 34–37
  डॉ0 रीना अग्निहोत्री
- मैत्रेयी पुष्पा की भाषा में वाक्य संरचना के घटक — 38–43
  डॉ0 रेखा गौतम
- भारतीय धर्माचारी संस्कार : स्वरूप और विकास — 44–46
  डॉ0 शंकर मुनि राय
- गीता का सामाजिक दर्शन एवं मूल्य — 47–48
  प्रो0 सुनील
- संस्कृत–व्याकरण में उदात्तत्वादिवर्णधर्म : एम विमर्श — 49–60
  डॉ0 विक्रम जीत
- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं असंलग्न आन्दोलन — 61–64
  डॉ0 विशाल चौबीसा
- धर्मस्वरूपम् — 65–68
  ललित मोहन जोशी
- योग चिकित्सा द्वारा तनाव प्रबंधन — 69–73
  मदन लाल गुजर

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित षाण्मासिकी शोध पत्रिका

(International Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-५ अंक-१ भाग-१

जनवरी-जून २०१८

प्रधानसम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक

वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी

वाराणसी

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

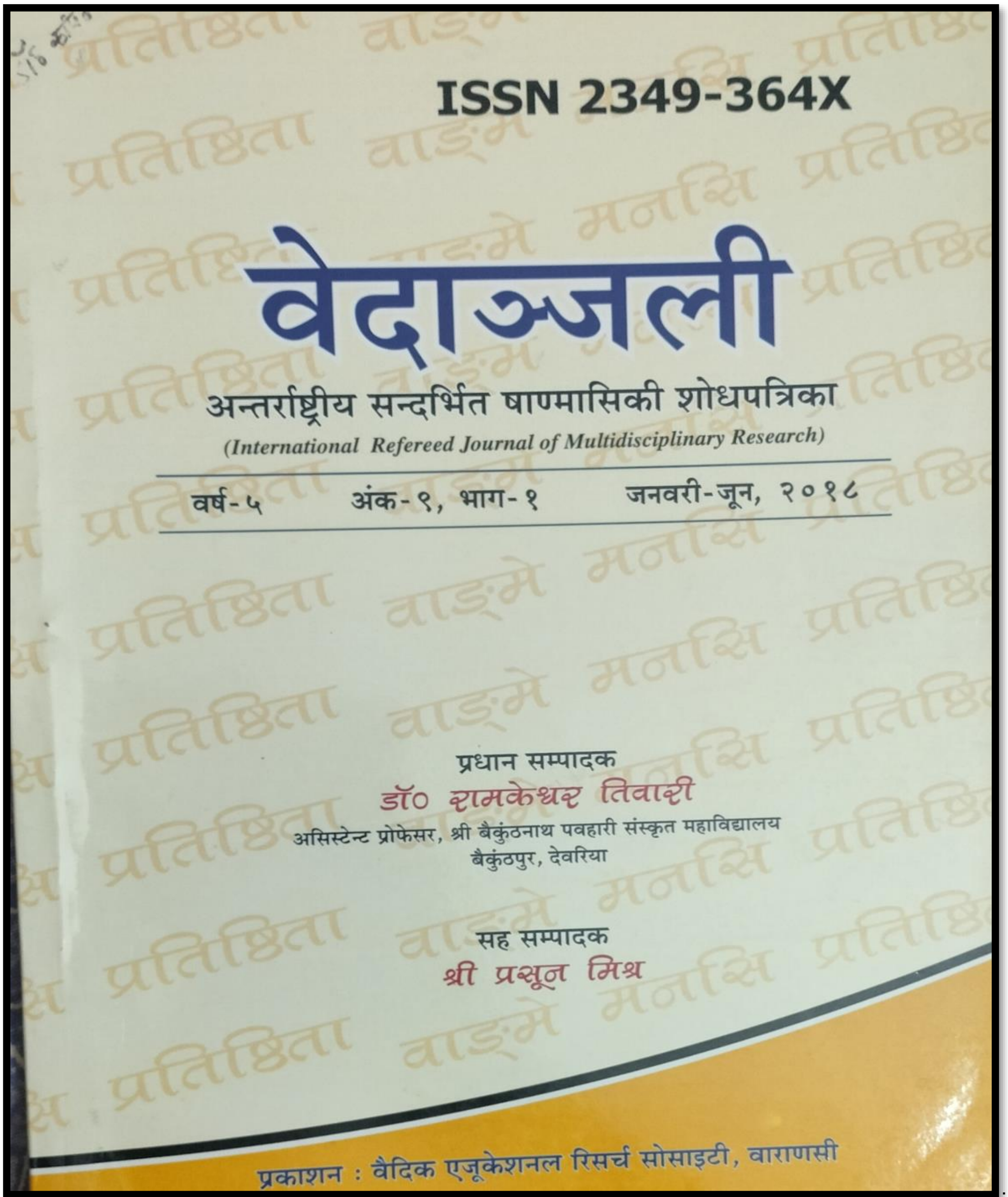

ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भित षाणमासिकी शोधपत्रिका

(International Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-५ अंक-९, भाग-१ जनवरी-जून, २०१८

प्रधान सम्पादक

डॉ० रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU= PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E= hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

UGC JOURNAL NO-41285

ISSN : 2321-0443

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

राजनीति विज्ञान विशेषांक

अंक - 58

(अप्रैल—जून, 2018)

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार
2018

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)
GOVERNMENT OF INDIA
2018

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

International Journal of Botany Studies

Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal

ISSN: 2455-541X, Impact Factor: RJIF 5.12

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Suresh Prasad Saket"** has published manuscript titled **"Wild and some threatened medicinal plants used by Tribals of Sidhi district (Madhya Pradesh), India"**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**3**
Issue	:	**2**
Month	:	**Mar-Apr**
Year	:	**2018**
Page Number	:	**82-86**
Certificate No.	:	**3-2-11**
Published Date	:	**01-03-2018**

Yours Sincerely,

Nikhil Gupta
Publisher
International Journal of Botany Studies
www.botanyjournals.com
Tel: 9999888931

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

International Journal of Advanced Science and Research
ISSN: 2455-4227
Impact Factor: RJIF 5.12
www.allsciencejournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 44-49

Taxonomical studies of family Poaceae and their distribution in central Jabalpur, MP

Suresh Prasad Saket
State Forest Research Institute, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Abstract
The grass family (Poaceae) is usually well known taxonomically. The research work is based on identification, nomenclature, classification with their taxonomy hierarchy. These are characterized and classified according to variety of morphological characters, particular those of inflorescence and spikelets. The extensive and intensive trips are conducted throughout of the study area in 2015 to 2016. In present study, a total 26 grass species are documented with their registration number. An artificial key is provide for these genera and species whenever there are two or more taxa. Hence, there are two species reported first time for the flora of Jabalpur viz., *Avena fatua* L. and *Chloris barbata* L. For each taxa the correct name, vernacular name, detailed taxonomic characters, flowering & fruiting time and habitats are mentioned.

Keywords: taxonomy, artificial keys, distribution, herbarium

Introduction

The family *Poaceae* is the second largest family amongst monocotyledonous plants, which is of worldwide distribution. Grass which refers to any of the low, green, non-woody plants belongs to the large family of *Poaceae*. This family contains between 500 and 650 genera and about 10,000 species [17]. Poaceae are most ecologically and economically important plant families [15].

Poaceae are generally characterized by their long, narrow leaves which form sheaths around their stems and in some, their flower lacks petals and sepals. Their roots are generally fibrous and branching with an extensive underground network or surface stems. The success of grasses is due to their ability to withstand being grazed or mowed [5]. The family Poaceae has cylindrical stems and distinct nodes and internodes. Their leaves are simple, alternate, arranged in two vertical rows or distinctions. *Poaceae* flowers are usually hermaphrodite, protandrous, sometimes unisexual but monoecious, zygomorphic and hypogynopus. They are usually bisexual.

Morphological similarities between grasses and sedges are close relationship of these families. However, plant taxonomists now attribute these similarities to convergent evolution, and place Poaceae and Cyperaceae in different orders [4, 2, 3, 1, 8, 18].

The aims and objectives of the present paper are mainly to get taxonomic information of grasses and their distribution in Jabalpur region.

Material & Methods

Extensive field visits were undertaken to different localities of Jabalpur city and surrounding areas of throughout the year (various seasons). Field notes were made by the location and plant habit. Inflorescences of the specimens were recorded by photographs. The collected specimens were kept immediately into the plastic bags to identify and classify systematically. The specimens have been observed and described in detail.

The collected fresh specimens were identified on the spot or in the laboratory with the help of standard floras like Flora of British India by Hooker [6, 12, 11, 16, 10, 14].

Herbarium preparation

The traditional herbarium method also adopted from Santapau [13, 7] and the prepared herbarium specimens was confirmed at S.F.R.I., Jabalpur (M.P.). Various experts were also consulted for identification, their systematic position and nomenclature of the species, genera and families and other literatures. An artificial key to the species were also constructed.

Taxonomic keys for Identification

1. Lower glumes usually well developed:
1a. Racemes digitate. Upper glumes with globular- tipped ....*Alloteropsis*
2. Inflorescence interrupted by spathes:
2a. Spikelets in groups of threes, awn slender................*Apluda*
3. Inflorescence compounds, variously branched:
3a. Lemmas 3- awned from the tip........*Aristida*
4. Lower glume of sessile spikelet not branched, not:
4a. Rugose, wingless...........*Borthriochloa*
5. Lower glume present, shorter than the upper glume:
5a. Spikelets dorsally compressed. Lower glume turned towards rachis...........*Brachiaria*
5b. Lemma 1-per spikelet.........*Cynodon*
6. Inflorescence not feathery. Spikelets not covered with silky hairs:
6a Spikelet not subtended by bristles ......*Dactyloctenium*
7. All spikelets both sessile and pedicelled, in the racemes:
7a. More or less alike, glumes herbaceous, greenish....*Dicanthium*
8. Lower glume completely absent:
8a. Upper lemma with hyaline, flat margins......*Digitaria*
9. Lower glume present, shorter than the upper glume:

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

By – Suresh Prasad Saket

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY AND SWACHH BHARAT ABHIYAN	Dr. Ajay Agrawal Dr. Amitabh Pande Poorva Pande Sharma	1-4
2	THE RELATIONSHIP BETWEEN EDUCATION AND SOCIAL MOBILITY OF WOMEN ON THE BASES OF THEIR WORK PROFILE	Dr. Deepika Gupta	5-13
3	Role of Education in Tribal Development	Abhinika Pandey	14-17
4	RURAL DEVELOPMENT IN INDIA PRE-INDEPENDENCE	Dr. Gulnar Vilku	18-19
5	The Issues and Threats lies in between the opportunities in Medical Tourism of India: A critical and suggestive analysis Of this untapped potential industry	Ajay Mishra Dr. C.K. Buttan	20-26
6	THE CONCEPT OF ARTHANAREESAWAR IN ABROAD	K. KUMARESAN	27-32
7	A Study of Cost and Returns Paddyand Banana in Thoothukudi District	A. THILAGAVATHY	33-41
8	Glyceraldehyde 3 Phosphate Dehydrogenase : A Potent Housekeeping Gene of Caprine Fibroblast Cells	Sudhir Kumar Jain Hemlata Jain Bikash Chandra Sarkhel Akhilesh Kumar Pandey	42-45
9	Financial Scheme and Credit Facility of Agriculture Produce	Dr. Anu Jain Dr. Sunil Deshpandey	46-50
10	Evaluation of total saponin content in methanolic extracts of Cymbopogon citratus, Ocimum sanctum and Trigonella foenum-graecum : A comparative study	Deepali Sahu Rashmi Vyas	51-55
11	Classification of Sachin Dev Burman's Few Film Song Based on Taal and Raga	Paheli Gope Utpal Biswas	56-60
12	INCOME ANALYSIS OF MP TOURISM HOTELS IN MADHYA PRADESH	Banashree Das	61-64
13	ROLE OF EMPLOYEE SATISFACTION IN AN ORGANIZATION	Dr. Shalini Dubey	65-67
14	Critical Analysis of Direct Cost of Health Care in India	Dinesh Kumar Agrawal	68-74
15	An Existentialist Reading of John Steinbeck's Grapes of Wrath	Rajeev Ranjan Tigga	75-78
16	Positions of Pakistan-India on Third-Party Intervention	Ajaz Ahmad Khan	79-85
17	STANDING ORDERS AND GRIEVANCE PROCEDURE	Rashmi Singh	86-88
18	Bildungsroman is one of the most important genres for young adults	Geeta Warade	89-96
19	Quantum Chemical elucidation of itinerancy in Y (III) with Encompassing Ln (III) series	Nasreen Anjum Khan Sarika bansod S. N. Limaye	97-101

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 5, No. - 9 JULY 2018
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-3.9 Research Journal

Quantum Chemical elucidation of itinerancy in Y (III) with Encompassing Ln (III) series

Nasreen Anjum Khan, Sarika bansod and S. N. Limaye
Department of Chemistry, Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.)

Lanthanide is a series of fifteen elements (including lanthanum). In periodic system they are placed in III[rd] group by virtue of their oxidation state. Sc (III) and Y (III) are another member of the same group kept on account of their electronic configurational similarity. The 4f-shells in the lanthanides are deeply seated and their strong shielding makes these orbitals less available for bonding. This further adds to the similarity in the chemical behavior of Yttrium (III) with lanthanide series. This chemical resemblance is so natural that Yttrium in minral form, generally occurs in association with Holomium (III) and Erbium (III) which is an assigned position to Y (III) on account of ionic potential or relative acid character of the cation. However, this occurrence of Yttrium (III) in association with lanthanide is not always with Ho (III) and Er (III), but Yttrium (III) has been found to "role" across the entire lanthanide series. This rolling of the Yttrium across the series is the point of study and that is called the **nomadicity** or **itinerancy** in the position of Yttrium (III) with the encompassing Ln (III) elements.

Y (III) itinerancy can be better explained with the help of the following diagram:

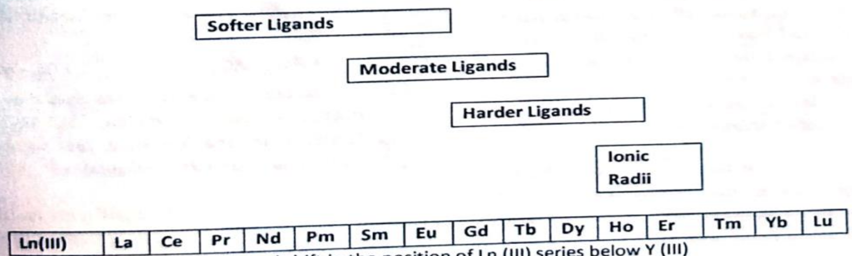

Fig 1 Ligand shift in the position of Ln (III) series below Y (III)

The above chart extends a graphical representation to the present hypothesis. It may be states that the softer ligands on account of their greater influence on 4f- shell may give rise to expansion of the effective ionic radii, which on its turn make the Yttrium(III) to fit suitably with heavier lanthanides member. [A drift towards Nd(III)]. In case of moderate ligands the influence decreases and so does the position of Yttrium (III) shifting it towards middle members of the series. And finally incase of harder ligands the position becomes as similar to that of the ionic radii of gaseous Ln(III) ion [1-3] where Y(III) fits with its official position ~Ho(III) and Er(III).

The theoretical background to the phenomenon of itinerancy in Y(III) with respect to encompassing lanthanide series, have been discussed in earlier. In support of the hypothesis of the work, formation constant values for some O-O and O-N donor ligands have been taken into consideration for the entire lanthanide series

By – Dr. Nasreen Anjum Khan

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

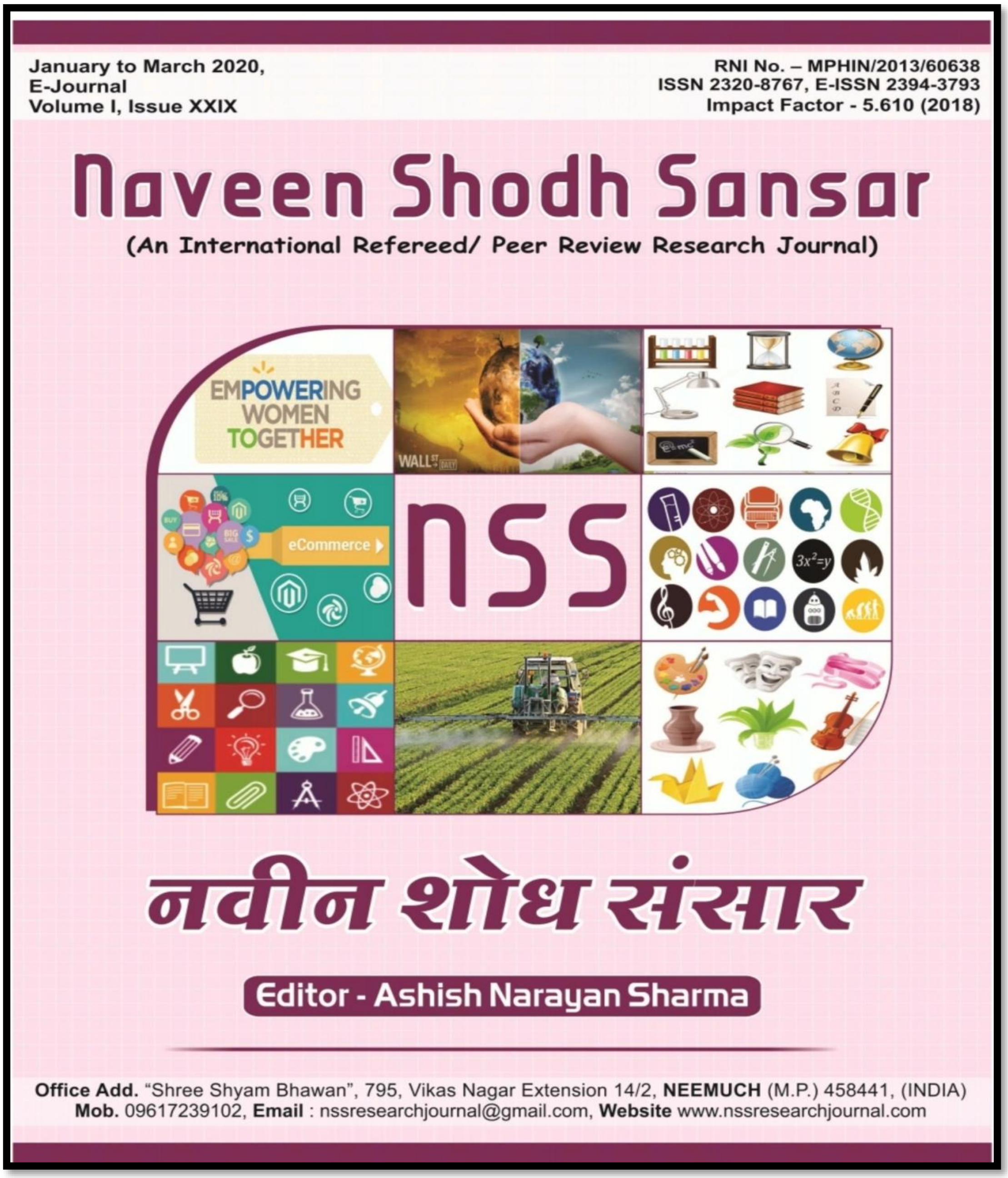

January to March 2020,
E-Journal
Volume I, Issue XXIX

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 5.610 (2018)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) January to March 2020, E-Journal, Vol. I, Issue XXIX 5

94. फिल्मों से गायब होता लोकतत्व (डॉ. ज्योति मिश्रा) ... 269
95. आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना का विकास मॉडल (डॉ. ए. के. जैन) ... 273
96. भारतीय पराक्रम का प्रतीक- समुद्रगुप्त (डॉ. शुक्ला ओझा) ... 275
97. A Study of Consumer Buying Process of Milk Products (with special reference to Indore District) (Amit Kumar Singh, Dr. Kumbhan Khandelwal) ... 278
98. A Themetic Study On The Degree Of Approximation Of A Function (Dr. Dalendra Kumar Bhatt) ... 283
99. Isolation and Identity Crisis in Anita Desai's Novels (Dr. Vishal Sen) ... 285
100. Curd and Its Benefits (Dr. Rajesh Masatkar) ... 287
101. बैगा जनजातियों के त्यौहार (मंडला जिले के संदर्भ में)(डॉ. ज्योति सिंह) ... 289
102. जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव (म.प्र. के छिन्दवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में) (अंचल रामटेके) ... 292
103. महिलाओं में मद्यपान के कारण एवं दुष्परिणाम (डॉ. सुनीता खण्डेलवाल) ... 294
104. भक्ति आन्दोलन की निर्गुण और सगुण धाराएँ (डॉ. मधुसूदन चौबे) ... 298
105. मानव संसाधन विकास कोल इंडिया लिमिटेड की विशेष इकाई वेस्टर्न कोल फील्ड लिमिटेड के अंतर्गत (ऊर्जा एवं ईंधन के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था में अग्रसर) (डॉ. दिनेश कुमार चौधरी) ... 300
106. भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली: एक अध्ययन (डॉ. अजय कुमार गुप्ता) ... 304
107. Activities Affecting The Carbon Cycle (Dr. Rashmi Ahuja) ... 307
108. Global Patterns of Energy Consumption (Dr. Sadhna Goyal) ... 309
109. Medicinal Plants : Common Sources Of Traditional and Modern Drugs (Dr. Madhuri Singhal) ... 310
110. An Introduction of geographical indication – A brief study (Lok Narayan Mishra) ... 312
111. मध्यप्रदेश में पर्यावरण प्रदूषण (डॉ. वसुधा अग्रवाल) ... 314
112. निमाड़ में सन्तों से संबंधित मंदिर, समाधि स्थल एवं मेले (डॉ. मधुसूदन चौबे) ... 318
113. A study on ground water quality in Dhar town, Distt. Dhar (M.P.) (Dr. D.S. Waskel, Dr. K.S. Alawa) ... 321
114. ग्रामीण भारत में गैर कृषि क्षेत्र की महत्ता (डॉ. आर.एस. मण्डलोई) ... 324
115. आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण (डॉ. प्रतिमा बनर्जी) ... 326
116. औद्योगिक प्रदूषण का पर्यावरण पर प्रभाव (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) (डॉ. प्रतिमा बनर्जी) ... 329
117. Current Trends In E-Commerce : A Study (Dr. Rajendra Singh Waghela) ... 332
118. The Economic And Food Value Of Edible Wild Plants Of Chhattisgarh (Special Reference To Mushroom In Bilaspur District) (Shraddha Das) ... 335
119. दक्षिण पूर्व कोयला प्रक्षेत्र कोरबा में श्रमिकों में मनोबल और अनुशासन (आशा राय, डॉ. प्रतिमा बैस) ... 338
120. An Analytical Study on startups in India with reference to issues, challenges and Government initiatives (Dr. Manohar Das Somani) ... 341
121. मध्यप्रदेश में जैव-विविधता की हानि और उसका संरक्षण (डॉ. नसरीन अंजुम खान) ... 346
122. उज्जैन जिले में सिंहस्थ महापर्वों का इतिहास (डॉ. मोहन निमोले) ... 348
123. जनसंचार : कल, आज और कल (डॉ. दाशरथी बेहेरा) ... 350
124. Literary Sustenance in Pandemic Crisis (Dr. Iris Ramnani) ... 354
125. Effects of Pranayam its Biochemistry and Health (Dr. Nagendra, Dr. Laxmi Chand) ... 356
126. मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान सरकारों के कुल व्ययों का तुलनात्मक अध्ययन (डॉ. एल.एन. शर्मा) ... 358
127. Environment Conservation – An Indian Approach (Amrita Khatri) ... 361
128. संगठनात्मक व्यवहार (डॉ. पी. डी. ज्ञानानी) ... 363
129. खरगोन जिले की कार्यशील एवं गैरकार्यशील जनसंख्या का संरचनात्मक अध्ययन (डॉ. प्रमिला बघेल) ... 367

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'

NSS Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.610 (2018) January to March 2020, E-Journal, Vol. I, Issue XXIX 346

मध्यप्रदेश में जैव-विविधता की हानि और उसका संरक्षण

डॉ. नसरीन अंजुम खान *

प्रस्तावना - जैव विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता है जो कि प्रजातियों में प्रजातियों के बीच और उनकी परितंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है। विकास की प्रक्रियाओं में स्वाभाविक रूप से प्रजातियाँ लुप्त होती है। लेकिन मानव की स्वाभाविक रूप से प्रजातियाँ लुप्त होती है।[1] लेकिन मानव की गतिविधियों के कारण प्रजातियाँ और पारिस्थितिकी प्रणालियाँ खत्म हो रही है। ऐसा अनुमान है कि पृथ्वी की लगभग दो से आठ प्रतिशत तक प्रजातियाँ अगले 25 सालों में लुप्त हो जायेगी। जैव विविधता के नष्ट होने का असर हमारे आर्थिक और सामाजिक विकास पर भी होता है। जैव विविधता में भविष्य में स्वास्थ्य से जुडी खोजों और आर्थिक विकास की संभावना भी बनी रहती है। मानव समाज भी जलवायु में बदलाव जैसी नई चुनौतियों का सामना करने के लिए फसलों की किस्मों और पारिस्थितिकी प्रणालियों के लचीलेपन पर निर्भर रहेगा। जीवन की विविधता हमारी बीमा पॉलिसी है। इसी पर हमारी खुद की जिंदगी और आजीविका निर्भर करती है।

जैव विविधता की हानि के कारण - जैव विविधता को होने वाली हानि के सीधे कारण जैसे आवास क्षेत्र खत्म होना, नई प्रजातियों का आक्रमण, प्रदूषण, पृथ्वी की जलवायु में बदलाव, प्रजातियों का अत्याधिक दोहन और खेती और वानिकी की गतिविधियाँ। जैव-विविधता के खत्म होने की समस्या का बुनियादी कारण हमारे रहन सहन का तरीका है।

आवसीय क्षति- जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, बढता शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, वनों के विनाश के कारण बने, जिनकी उजडने से हजारो पशु पक्षियों व प्राणियों का बसेरा ही खत्म हो गया व इस प्रकार उनका अस्तित्व ही खतरे में पड गया। कई जातियाँ लुप्त होने की कगार पर हैं या लुप्त हो चुकी है।[2]

पौधों और जानवर की प्रजातियों का अतिशय दोहन - मानव के द्वारा कई प्रजातियों का अतिशय दोहन भोजन और आश्रय के लिए किया गया है। समुद्री जीव जंतु तो खास तौर से अतिशय दोहन के कारण संकटग्रस्त हो गए है। तेजी से बढते दवा उद्योग की अत्यधिक मांग के कारण कई प्रकार के औषधीय पौधों पर विपरीत असर पड रहा है।

मिट्टी, पानी और वातावरण का प्रदूषण- प्रदूषण से पारिस्थितिकी प्रणाली की प्रक्रिया में बाधा पैदा हो सकती है। ज्यादा प्रदूषण से संवेदनशील प्रजातियाँ कम हो जाती है। पशुओं के इलाज की डाइक्लो फैनिक नाम एक दवा मवेशियों के लिए दर्दनाशक के रूप में इस्तेमाल की जाती है। डी.डी.टी नामक कीटनाशक दवा फिशिंग ईगल्स के शरीर में जमा हो गया है। इससे इनके अण्डों का छिलका पतला हो गया है और वे समय से पहले टूट जाते हैं, जिससे फिशिंग ईगल के बच्चे मर जाते है। इस प्रकार फिशिंग ईगलों की तादाद बहुत कम हो गई है।

भूमण्डल की जलवायु में बदलाव- जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभाव समुद्र के तटीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली दलदली क्षेत्र की वनस्पतियों पर पडेगा जो तट को स्थिरता प्रदान करने के साथ साथ समुद्री जीवों का प्रजनन का आदर्श स्थल भी होती है। जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभाव समुद्र के तटीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली दलदली क्षेत्र की वनस्पतियों पर पडेगा जो तट को स्थिरता प्रदान करने के साथ समुद्री जीवों प्रजनन का आदर्श स्थल भी होती है।[3]

आबादी में वृद्धि और आवश्यकता से अधिक खपत- पूरी दुनिया में आबादी की बढोतरी और बढती हुई खपत के कारण जैव विविधता का नुकसान हो रहा है। भारत में आबादी का 50 फीसदी भाग देश की उर्जा, खनिजों और रसायनों के बडे भाग की खपत करता है। यह खपत इन संसाधनों के अतिशय दोहन को प्रोत्साहित करती है। खनिजों की बढती मांग के कारण देश में कुछ आरक्षित वन क्षेत्रों को सामान्य क्षेत्रों में परिवर्तित कर दिया गया है। जिससे इन इलाकों के भीतर के खनिज भण्डारों का दोहन किया जा सके।

मानव और वन्य जीव का टकराव- जानवरों के प्राकृतिक आवास क्षेत्र के नष्ट होने से, जंगलों के अतिशय दोहन से जैव विविधता को हानि पहुँचती हे। मानव और वन्य जीवों के बीच टकराव से वन्य जीव और लोगों की आजीविका दोनो के लिए गंभीर संकट पैदा हो गया है। यह टकराव प्रजातियों को और उनके आवास क्षेत्र को सीधे संकट में डाल देता है। उदाहरण के लिए बदले की भावना से वन्य जीवों की हत्या करना। यह परोक्ष रूप से अन्य तत्वों (उदाहरण के लिए वन्य जीवन का गैरकानूनी व्यापार) को भी जन्म देता है।

जैव विविधता का संरक्षण- जैव विविधता को मूल्य की अभी पूरी तरह से नही समझा जा सका है। अत: इसका उपयोग विवेक से और टिकाउ तरीके से किया जाना चाहिए, ताकि इसकी रक्षा की जा सके इसके संरक्षण के लिए कई राष्टीय कानून और कार्यक्रम बनाए गए है।

पवित्र प्राकृतिक स्थल और प्रजातियाँ- किसी समुदाय द्वारा किसी खास स्थल या प्रजाति को पवित्र घोषित किये जाने से मध्यप्रदेश में पवित्र अमराईयों, पवित्र सरोवरों और पवित्र चारागाहों का लगातार संरक्षण हुआ है। वटवृक्ष और हनुमान लंगूर जैसी प्रजातियों को पूजनीय माना जाता है और उनका संरक्षण किया जाता है।[4]

प्रबंधन के पारम्परिक तरीके- प्रबंधन के कुछ पारम्परिक तरीके से भी जैव संरक्षण के लिए मददगार साबित हुए है, उदाहरण के लिए कुछ स्थानों पर मवेशियों के चरने पर प्रतिबंध रहता है या हरे भरे पेडों को काटने की

* सह- प्राध्यापक (रसायन शास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिंदवाडा (म.प्र.) भारत

By- Dr. Nasreen Anjum

Digitally signed by DR. POOJA TIWARI
DN: OU=IQAC CO-ORDINATOR, O=" GOVERNMENT COLLEGE, BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. POOJA TIWARI, E=bichhuagovtcollege@gmail.com
Date: 2024.07.31 00:24:23+05'30'

Digitally signed by DR. R. P. YADAV
DN: OU=PRINCIPAL, O=" GOVERNMENT COLLEGE BICHHUA, DIST. CHHINDWARA (M.P.)", CN=DR. R. P. YADAV, E=hegcbicchh@mp.gov.on
Date: 2024.07.31 00:24:44+05'30'